



भक्ति-नीति माधुरी

मीराबाई



बसौ मोरे नैनन में नन्दलाल ।
मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल, अरुन तिलक दिये भाल ।
मोहनि मूरति साँवरी सूरति, नैना बने, बिसाल ।
अधर-सुधा-रस मुरली राजत, उर वैजन्ती माल ॥
छुद्र घण्टिका कटि-तट सोभित, नूपुर सबद रसाल ।
मीरा प्रभु संतन सुखदाई, भगत बछल गोपाल ॥

मीराबाई का जन्म राजस्थान में मेवाड़ के पास चोकड़ी (कुड़की) गाँव में हुआ था। बचपन से ही कृष्ण भक्त थीं। इनकी रचनाओं में कृष्ण के प्रति प्रेमभाव का वर्णन है।

तुलसीदास

का बरषा जब कृषी सुखाने ।
समय चूकि पुनि का पछिताने ॥ 1 ॥

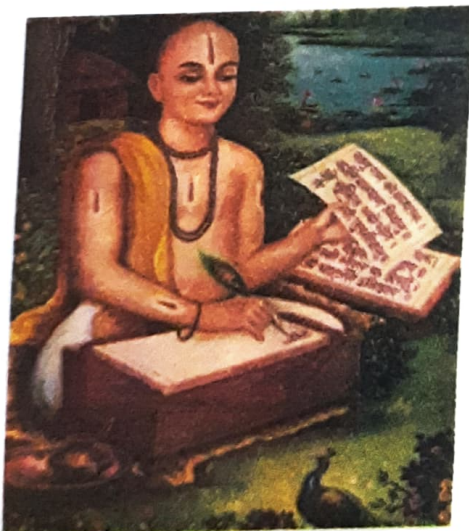
पर उपदेस कुसल बहुतेरे ।
जे आचरहिं ते नर न घनेरे ॥ 2 ॥

कादर मन कहूँ एक अधारा ।
दैव-दैव आलसी पुकारा ॥ 3 ॥

हित अनहित पसु पच्छिउ जाना ।
मानुष तनु गुन ग्यान-निधाना ॥ 4 ॥

जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना ।
जहाँ कुमति तहँ विपति निधाना ॥ 5 ॥

परहित सरिस धरम नहिं भाई ।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई ॥ 6 ॥



तुलसीदास का जन्म सन् 1532 ई० में चित्रकूट (तत्कालीन बाँदा) जिले के राजापुर ग्राम में हुआ था। रामचरितमानस, जानकी मंगल, विनय पत्रिका, वैराग्य संदीपनी आदि इनकी प्रमुख रचनाओं में ज्ञान, भक्ति और वैराग्य का अद्भुत समन्वय हुआ है। इनकी मृत्यु सन् 1623 ई० में हुई थी।





धूरि भरे अति सोभित स्यामजू, तैसी बनी सिर सुन्दर चोटी।
खेलत खात फिरैं अँगना, पग पैजनी बाजति पीरी कछोटी॥
बा छबि को रसखानि बिलोकत, वारत काम कला निज कोटी।
काग के भाग बड़े सजनी हरि-हाथ सों लै गयौ माखन-रोटी॥

या लकुटी अरु कामरिया पर, राज तिहूँ पुर के तजि डारौं।
आठहुँ सिद्धि नवौं निधि के सुख, नन्द की गाय चराय बिसारौं॥
नैनन ते रसखानि जबैं, ब्रज के बन-बाग तड़ाग निहारौं।
कोटिक ये कलधौत के धाम, करील की कुंजन ऊपर वारौं॥

रसखान का जन्म जिला हरदोई, उत्तर प्रदेश में हुआ था। रसखान कृष्ण भक्त थे।
इन्होंने अपनी कृतियों में कृष्ण के विविध रूपों का सुंदर वर्णन किया है। इनकी रचनाओं में
सुजान रसखान, प्रेम वाटिका, रसखान शतक प्रमुख हैं।



अभ्यास



शब्दार्थ

कछोटी	=	लंगोटी	बिलोकत	=	देखना
कोटी	=	करोड़ों	लकुटी	=	लाठी
कामरिया	=	कंबल	बिसारौं	=	भुला देना
तड़ाग	=	तालाब	निहारौं	=	देखना
कलधौत	=	सोना	कुंजन	=	कुंजों या झुरमुटों पर
करील	=	कीकर, एक काँटेदार झाड़ी	निधाना	=	खजाना
मानस	=	'राम चरित मानस' (वह महान ग्रंथ, जिसकी रचना तुलसीदास ने की है)	सुमति	=	अच्छे विचार
दैव	=	भाग्य	अरुन	=	लाल
अधमाई	=	नीचता	कादर	=	कायर
			सरिस	=	समान
			मकराकृत	=	मछली का आकार

कटि	= कमर	भाल	= मस्तक
अधर	= होंठ	सुधा	= अमृत
राजत	= शोभित	उर	= हृदय
छुद्र घण्टिका	= छोटी-छोटी घंटियाँ या घुँघरू		
भगत बछल	= भक्त वत्सल, भक्त को स्नेह देने वाले		

1. बोध प्रश्न : उत्तर लिखिए -

- (क) मीरा ने कृष्ण के किन गुणों का बखान किया है ?
- (ख) तुलसीदास ने सबसे बड़ा धर्म और सबसे बड़ा अधर्म किसे बताया है ?
- (ग) रसखान ने तीनों लोकों का राज्य किस बात पर न्यौछावर करने को कहा है ?
- (घ) रसखान ने कौवे को भाग्यशाली क्यों कहा है ?
- (ङ) रसखान ने कृष्ण की कैसी छवि का वर्णन किया है ?

2. नीचे लिखी काव्य पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए -

- (क) 'काग के भाग बड़े सजनी, हरि-हाथ सों लै गयौ माखन-रोटी।'
- (ख) 'कोटिक ये कलधौत के धाम, करील की कुंजन ऊपर वारैं।'
- (ग) समय चूकि पुनि का पछिताने।
- (घ) जहाँ कुमति तहँ विपति निधाना।
- (ङ) मीरा प्रभु संतन सुखदाई, भगत बछल गोपाल।

3. सोच-विचार : बताइए -

आप ऐसे लोगों को कौन-सा दोहा सुनाएंगे -

- जो अपना काम समय पर नहीं करते और बाद में पछताते हैं।
- जो आलसी हैं।
- जो स्वयं नहीं करते, किंतु दूसरों को उपदेश देते रहते हैं।
- जो दूसरों को कष्ट पहुँचाते रहते हैं।

4. भाषा के रंग -

- (क) 'बरषा' तद्भव शब्द है जिसका तत्सम रूप 'वर्षा' है। इसी प्रकार नीचे लिखे तद्भव शब्दों के तत्सम रूप को कोष्ठक से छाँटकर लिखिए -
(कुशल, कायर, धर्म, भाग्य, श्याम, मखन, आधार, धूलि)



तदभव तत्सम

कादर

धरम

भाग

धूरि

तदभव

स्याम

अधारा

माखन

कुसल

(ख) अधूरी पंक्तियों को पूरा कीजिए -

● का बरषा

..... का पछिताने।

● जहाँ सुमति

जहाँ कुमति

● परहित सरिस

पर पीड़ा सम

5. अब करने की बारी

(क) पता करें - कृष्ण के बाल रूप का वर्णन और किन-किन कवियों ने किया है।

(ख) पाठ में आए सवैयों को कंठस्थ करें और बालसभा में सुनाएँ।

(ग) अपने शिक्षक/माता-पिता के मोबाइल फोन पर इन कवियों की रचनाओं को सुनें तथा वैसे ही गाकर प्रस्तुत करने का अभ्यास करें।

6. मेरे दो प्रश्न : पाठ के आधार पर दो सवाल बनाइए -

1.

2.

7. इस पाठ से -

(क) मैंने सीखा -

(ख) मैं करूँगी/करूँगा -

शिक्षण संकेत -

कक्षा को दो वर्गों में बाँटकर अंत्याक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन कराएँ।

